आलू का खेती का उन्नत विधि

आलू भारत का सबसे महत्वपूण फसल है। तमिलनाडु एवं केरल को छोडकर आलू सारे देश म उगाया जाता है। भारत म आलू का औसत उपज 152 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जो विश्व औसत से काफा कम है। अन्य फसलां का तरह आलू का अच्छा पैदावार के लिए उन्नत किस्मां के रोग रहित बीजो का उपलब्धता बहुत आवश्यक है। इसके अलावा उवरकां का उपयोग, सिंचाई का व्यवस्था, तथा रोग नियंत्रण के लिए दवा के प्रयोग का भी उपज पर गहरा प्रभाव पडता है।

भूमि एवं जलवायू सम्बंधी आवश्यकताऐं :

आलू का खेती के लिए जीवांश युक्त बलूई-दोमट मिट्टी हा अच्छा होती है। भूमि म जलनिकासी का अच्छा व्यवस्था होनी चाहिए । आलू के लिए क्षाराय तथा जल भराव अथवा खडे पानी वाला भूमि कभी ना चुने। बढवार के समय आलू को मध्यम शीत का आवश्यकता होती है।

आलू का खेती के लिए उन्नत किस्म का बीज :

आलू का काश्त म सबसे महत्वपूण बात यह है कि इसका बीज अच्छा श्रेणी का हो। अच्छे बीज विशेषकर रोगाणूमुक्त बीज का प्रयोग करके आलू का पैदावार बढाई जा सकती है। अच्छा उपज के लिए जलवायू खण्ड या क्षेत्र के अनुसार केवल सिफारिश का गई उपयुक्त किस्म हा चुने।

उपयुक्त माप के बीज का चुनाव :

आलू के बीज का आकार और उसका उपज से लाभ का आपस मे गहरा सम्बंध है। इसलिए अच्छे लाभ के लिए 3 से.मी. से 3.5 से.मी.आकार या 30-40 ग्राम भार के आलूओं को हा बीज के रूप म बोना चाहिए।

आलू बुआई का समय एवं बीज का मात्रा :

उत्तर भारत मे आलू का बुआई इस प्रकार कर कि आलू दिसम्बर के अंत तक पूरा बन जाऐ। उत्तर-पश्चिमी भागां मे आलू का बुआई का उपयुक्त समय अक्तूबर माह का पहला पखवाडा है। पूर्वा भारत म आलू अक्तूबर के मध्य से जनवरा तक बोया जाती है।

आलू का फसल म **पंक्ति से पंक्ति का दूरा 50 से.मी. व पौधे से पौधे का दूरा 20-25 से.मी.** होनी चाहिए। इसके लिए 25 से 30 क्विंटल बीज प्रति हैक्टेयर पयाप्त होता है।

आलू बुआई का विधि :

उचित माप के बीज के लिए पंक्तियां मे 50 से.मी. का अन्तर व पौधां म 20 से 25 से.मी. का दूरा रखनी चाहिए।

उवरकां का प्रयोग:

आलू का फसल म प्रति हैक्टेयर 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस और 80 कि.ग्रा. पोटाश डालनी चाहिए। उवरकां का मात्राा मिट्टी का जांच के आधार पर निधारित करते है। बुआई के समय नत्रजन का आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश का पूरा मात्रा डालनी चाहिए।नत्रजन का शेष आधी मात्रा पौधां का लम्बाई 15 से 20 से.मी. होने पर पहला मिट्टी चढाते समय देनी चाहिए।

आलू म सिंचाई :

पहला सिंचाई अधिकांश पौधे उगजाने के बाद कर व दूसरा सिंचाई उसके 15 दिन बाद आलू बनने व फूलने का अवस्था म करनी चाहिए। कंदमूल बनने व फूलने के समय पानी का कमी का उपज पर बुरा प्रभाव पडता है। इन अवस्थाओं म पानी 10 से 12 दिन के अन्तर पर दिया जाना चाहिये ।

आलू म खरपतवारां का रोकथाम :

आलू का फसल म कभी भी खरपतवार न उगने द। खरपतवार का प्रभावशाला रोकथाम के लिए बुआई के 7 दिनों के अन्दर, 0.5 किलोग्राम सिमैजिन 50 डब्ल्यू.पी. (Cizamin 50 w.p.) या लिन्यूरोन (Linuron) का 700 लिटर पानी मे घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर के हिसाब से छिडकाव कर द।

आलू कटाई या खुदाई:

पूरा तरह से पका आलू का फसल का कटाई उस समय करनी चाहिए जब आलू के कन्दो के छिलके सख्त पड जाय। पूर्णतया पका एवं अच्छा फसल से लगभग 300 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज प्राइज़ होती है।

आलू का फसल म कीट पतग, सुत्रकृमि तथा बीमारीयॉ:
आलू का फसल म कंद वाले शलभ (Tubber Moth), कटुवा कीडे, जैसिड (Jassid) और माहू या चपा (Afid) से बहुत नुकसान होता है।

टयूबर मॉथ कीडे के लारवा कंदमूल मे सुराख बना देते ह। यदि कंद को मिट्टी से ढका न गया तो ये कीडे फसल को बहुत नुकसान पंहुचाते है। कंद वाले शलभ जैसे ही दिखाई द इन पर 0.07 प्रतिशत ऐन्डोसल्फान या 0.05 प्रतिशत मैलाथियान का छिडकाव कर और कंद को मिट्टी से ढक दें।

कटुवा कीडे पौधों का उनका जडों के पास, भूमि के निचे ही काट देते ह। इनका रोकथाम के लिए बुआई से पहले 5 प्रतिशत एल्ड्रिन या हैप्टाक्लोर 20 से 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर का दर से खेत का मिट्टी म मिलाऐं। खडी फसल म कटुवा का प्रकोप होने पर उपरोक्त दवा का बुरकाव पौधों का निचला सतह पर करते है।

जैसिड नम शरीर वाले हरे रंग के कीडे होते ह जो पौधों के पत्तों और अन्य कोमल भागों का रस चूस लेते ह।

माहू या चपा (एफिड): आलू म लगने वाले हरे रंग के किडे होते ह जो पत्ती का निचला सतह पर पाए जाते ह और पत्तों का रस चूसते ह। इनके कुप्रभाव से पत्तियां उपर को मुड जाती ह और उनका बढवार रूक जाती है। माहू या चपा लगने पर 0.07 प्रतिशत ऐन्डोसल्फान या 0.05 प्रतिशत मैलाथियान का छिडकाव करं।

जड गांठ सुत्रकृमि (Root Knote Nematode) प्रभावित पौध का पत्तियां सामान्य पौधों का पत्तियों से बडी हो जाती ह पौधों का बढवार रूक जाती है तथा गम मौसम म रोगी पौधे सूख जाते ह। जडों मे अत्यधिक गॉठे हो जाती ह। जडों का दरारों म प्राय दूसरे सूक्ष्मजीव जैसे फफूंद, जीवाणू आदि का आक्रमण होता है। बचाव के लिए फसल चक्र म मोटे अनाज वाली फसलों को लाना चाहिए। ग्रीटिंग्स ऋतु म 2-3 बार जुताई करनी चाहिए । बुआई से पहले एल्डीकार्ब, कार्बफ्यूरान का 2 किलोग्राम सक्रिय भाग प्रति हैक्टेअर का दर से खेत म डालना चाहिए।

आलू का फसल मे अनेक बीमारीयॉ जैसे झुलसा, पत्ती मुडना व मोजेक आदि लगती ह। इन बीमारियों से फसल को बहुत नुकसान होता है। इनसे फसल को बचाना बहुत आवश्यक जरूरी है।